इस्लाम में बीवी और शौहर के हुकूक़

हुज्जतुल इस्लाम मोलाना मो0 सुहफी साहब
अनुवादक सै0 सुफ़यान अहमद नदवी

साद बिन माज़, रसूले अकरम (स0) के एक वफ़ादार साथी थे जिन पर हुजूर (स0) ख़ास ध्यान देते थे। जब वह फ़ौत हुए तो आँहज़रत (स0) ने उनकी कफन–दफन की रुसूम अन्जाम देने में ख़ुद शिरकत की और फ़रमाया कि फरिश्ते भी साद के जनाज़े की जमाअत में शामिल हुए हैं।

रसूले अकरम (स0) ने उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और जब उन्हें क़ब्र में उतारा गया तो आँहज़रत (स0) क़ब्र में दख़िल हुए। अपने मुबारक हाथों से क़ब्र को ठीक किया। ईंटों के दरमियान जो छेद थे उन्हें मुकम्मल तौर पर बन्द किया और फिर सहाब–ए–किराम से फरमाया : ''अगरचे मुझे इल्म है कि यह क़ब्र जल्द ही टूट–फूट जाएगी लेकिन अल्लाह तआला इस बात को पसन्द फरमाता है कि जब उसके बन्दे कोई काम अन्जाम दें तो उसे पक्का और ठीक–ठीक अन्जाम दें।''

क़ब्र पर मिट्टी डाल दी गयी और उसे ज़मीन के साथ हमवार कर दिया गया। जब साद की माँ ने जो दफनाने के शुरु से आख़िर तक मौजूद थीं अपने बेटे के बारे में रसूले अकरम (स0) का ख़ास ध्यान देखा तो बेइख़्तियार कहने लगीं : ''ऐ मेरे बेटे! तुझे जन्नत मुबारक हो!''

रसूले अकरम (स0) ने उस औरत से फरमाया : ''ख़ामोश रह! तू अल्लाह से क्या उम्मीद रखती है? अभी–अभी क़ब्र ने साद को बड़ी सख़्ती से भींचा है।''

उसने पूछा : ''या रसूलुल्लाह (स0)! ऐसा क्यों हुआ?''

आपने फरमाया : ''इसलिए कि साद घर में अपनी बीवी से बद अख़लाक़ी से पेश आता था।''

(तबक़ात इब्ने साद जिल्द–3)

इमाम सादिक़ (अ0) फरमाते हैं : उस मर्द पर अल्लाह की रहमत हो जो अपनी बीवी के साथ अपने ताल्लुक़ात की बुनियाद एहसान और नेकी पर रखे।''

(मन ला यहजुरुहुल फ़क़ीह जिल्द–2 पेज–142)

रसूलुल्लाह ने फरमाया : ''तुम में बेहतरीन मर्द वह है जो अपने ख़ानदान वालों के साथ ज़ियादा अच्छा सुलूक करता हो और मैं तुम सबके मुक़ाबले में अपने ख़ानदान वालों से बेहतर सुलूक करता हूँ।''(वसाएलुश्शीआ जिल्द–7 पेज–122)

रसूलुल्लाह ने इरशाद फरमाया : जो शख़्स अपनी बीवी बच्चों के हुक़ूक़ को बर्बाद करे वह लानत और नफरत का मुस्तहक़ है।''

(वसाएलुश्शीआ जिल्द–7 पेज–122)

ज़ाहिर है कि इस्लाम में जैसे मर्दों को ताकीद की गयी है कि अपनी बीवियों के साथ अच्छा सुलूक करें उसी तरह बीवियों से भी कहा गया है कि शौहरों के बारे में अपनी ज़िम्मेदारियाँ पूरी करें और अपने आपको लायक़ बीवियाँ साबित करें।

इमाम मूसा काज़िम (अ0) ने फरमाया : ''औरतों का जिहाद यह है कि अच्छी बीवियाँ साबित हों।'' (अलकाफ़ी जिल्द–2 पेज–60)

अपनी शादी के शुरुआती दिनों में इमाम अली (अ0) अपनी पाक बीवी हज़रत फातिमा (स0) दोनों मिलकर रसूले अकरम (स0) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि हम में से हर एक की ज़िम्मेदारियों की हदें मुतअय्यन फरमा दीजिये। आँहज़रत ने बाहर के तमाम काम इमाम अली (अ0) के ज़िम्मे फरमा दिये और हज़रत फातिमा (स0) को घर के तमाम काम–काज का ज़िम्मेदार क़रार दिया।

(कुरबुल असनाद पेज–25)

मर्द और औरतें सही और आक़िलाना तौर पर ख़ुश बख़्ती की ज़िन्दगी की बुनियाद रख सकते हैं और जो काम उनकी सुकून भरी ज़िन्दगी के लिए नुक़सानदेह हों उनसे दूर रह सकते हैं। बाज़ औक़ात मामूली और ग़ैर अहम काम प्यार और मुहब्बत में बढ़ोत्तरी की वजह बन सकते हैं और इसी तरह कभी बिलकुल मामूली बातें झगड़ा और जुदाई पैदा कर सकती हैं।

रसूले अकरम (स0) ने फरमाया है : ''मुनासिब यह है कि औरत घर का चिराग़ रौशन करे और खाना तैयार करे और जब उसका शौहर घर आए तो घर के दरवाज़े के पास जाकर उसका इस्तेक़बाल करे और उसे ख़ुश आमदीद कहे और पानी और तौलिया लाकर शौहर के हाथ धोने में उसकी मदद करे और बिना वजह उसकी ख़ाहिशें पूरी करने से इनकार न करे।''

(मुस्तदरकुल वसाएल बाब मुक़द्दमातुन निकाह)

रसूलुल्लाह ने इरशाद फरमाया : ''जो मर्द किसी औरत से शादी करे उसे चाहिए कि उसका एहतेराम करने और उसे अज़ीज़ रखने की कोशिश करे।'' (मुस्तदरकुल वसाएल बाब मुक़द्दमातुन निकाह)

बीवी की ग़लती का ज़िक्र बच्चों के सामने न करो अगर तुम्हारे बच्चे अपनी माँ की ग़लती का ज़िक्र करें तो तुम्हें बच्चों के दिमाग़ से इस बारे में सुकून दिलाना चाहिए और उनके दिलों में माँ का एहतेराम क़ायम करना चाहिए। और माँ का भी यह फ़र्ज़ है कि हमेशा बच्चों को बाप का एहतेराम करने की तलक़ीन करे।

औरत और मर्द दोनों का फ़र्ज़ है कि अपने आपको एक–दूसरे के सामने बावक़ार और पुरकशिश बनाकर पेश करें और गन्दगी और नापसन्दीदा हालत में रहने से परहेज़ करें।

हसन बिन जहम कहता है कि मैंने एक बार देखा कि इमाम मूसा काज़िम (अ0) ने ख़िज़ाब लगा रखा है। मैंने हैरान होकर इसकी वजह पूछी तो आपने जवाब में फरमाया : ''मर्द का अपने चेहरे–मोहरे और लिबास को सजाना औरत की इज़्ज़त को बढ़ाता है। (क्योंकि अगर औरत अपने शौहर में दिलचस्पी ले तो फिर वह दूसरे मर्दों की तरफ नहीं देखती) बहुत सी औरतें अपने शौहरों का ध्यान और दिलचस्पी न होने की वजह से बुरे किरदार वाली हो जाती हैं।''

फिर आपने फरमाया : ''क्या तुम इस बात को पसन्द करते हो कि अपनी बीवी को बेजान व परेशान हाल देखो?''

मैंने जवाब दिया : ''नहीं।''

इस पर आपने फरमाया : ''वह भी तुम्हारी तरह ही है और इस बात को पसन्द नहीं करती कि उसका शौहर गन्दा रहे और परेशान हाल

हो। बिला शुब्हा पाकीज़गी, ख़ुश्बू लगाना और सर और चेहरे को ठीक हालत में रखना अम्बियाए किराम (अ0) के अख़लाक़ में से है।

एक ख़लीफा के हुकूमत के ज़माने में एक औरत ने ख़लीफा के पास अपने शौहर के ख़िलाफ शिकायत की और तक़ाज़ा किया कि उसके शौहर को हाज़िर करके उसे उस से तलाक़ दिलायी जाए।

ख़लीफा ने वजह पूछी तो औरत ने जवाब दिया : ''मैं अपने शौहर को पसन्द नहीं करती और मुझे उसके साथ ज़िन्दगी गुज़ारना नापसन्द है।''

ख़लीफा औरत की मायूसी की वजह मालूम करना चाहता था चुनानचे उसने मुख़तलिफ तरीक़ों से मामले की छान–बीन की। इस बारे में उनके बीच इस तरह बात–चीत हुई :

ख़लीफा : क्या तुम्हारा शौहर तुम्हारे ज़िन्दगी के ख़र्चे अदा करने में कमी करता है?

औरत : नहीं।

ख़लीफा : क्या वह तुम्हें मारता पीटता और तकलीफ देता है?

औरत : नहीं।

ख़लीफा : क्या वह तुमसे अलग रहता है?

औरत : नहीं। इनमें से कोई बात नहीं है। मेरा शौहर एक अच्छा आदमी है लेकिन मुझे पसन्द नहीं है।

ख़लीफा ने उस औरत के शौहर को हाज़िर करने का हुक्म दिया। कुछ देर गुज़रने पर सरकारी आदमी एक शख़्स को ख़लीफा की ख़िदमत में ले आए जो बेहद गन्दा और परेशान हाल था। उसके बाल बिखरे और उलझे हुए थे, नाखुन बढ़े हुए थे और कपड़े–फटे पुराने थे।

ख़लीफा ने इस पर भी बहस की ताकि सवालात और जवाबात से औरत की मायूसी की वजह से पता चलाया जा सके लेकिन कोई वजह समझ में न आ सकी। फिर ख़लीफा को ख़याल आया कि शायद औरत की बेज़ारी की वजह उसके शौहर की यही परेशान हाली हो। इसलिए उसने औरत को हुक्म दिया कि आज तुम वापस जाओ और कल अपने शौहर के साथ तलाक़ जारी करने के लिए यहाँ आ जाओ।

औरत चली गयी। उसके जाने के बाद ख़लीफा ने अपने मुलाज़मीन को हुक्म दिया कि उसके शौहर को हम्माम में ले जाएँ और उसके सर और चेहरे का सुधार कराएँ और उसे साफ–सुथरे कपड़े पहनाएँ। इस काम से फ़ारिग़ होने के बाद उसे भी रुख़सत कर दिया गया और हुक्म दिया कि कल सुब्ह अपनी बीवी के साथ यहाँ हाज़िर हो जाओ।

दूसरे दिन ख़लीफा ने काफी इन्तिज़ार किया, लेकिन उनमें से कोई भी न आया। उसने किसी को भेजा ताकि उन्हें हाज़िर किया जाए। जब वह आए तो ख़लीफा ने औरत से कहा कि अब हम तुम्हारी तलाक़ जारी करने के लिए तैयार हैं।

औरत ने बेचेनी के साथ घबराकर कहा : ''नही! अब मैं अपने शौहर से जुदा होने पर हरगिज़ तैयार नहीं हूँ। मैं उसे चाहती हूँ और जो कुछ कल कह चुकी हूँ उस पर शर्मिन्दा हूँ।''

ख़लीफा हंसा और उन्हें प्यार और मुहब्बत

से ज़िन्दगी गुज़ारने की नसीहत की।

ख़लीफा की सोच ठीक थी क्योंकि यह मुमकिन है कि औरत या मर्द की परेशान हाली, मायूसी और नफरत यहाँ तक कि तलाक़ और जुदाई को वाजिब कर दे।

इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ0) फरमाते हैं : ''औरत को अपने शौहर की ख़ातिर ज़ेवर के बग़ैर नहीं रहना चाहिए चाहे वह गर्दन में हार ही पहन ले।'' (अलकाफ़ी जिल्द–2 पेज–61)

अगर औरत इन मसाएल की तरफ ध्यान दे जो बज़ाहिर बे अहम्मियत नज़र आते हैं और अपने बनाव सिंगार और घर के मामले सुलझाने का एहतेमाम करे तो वह अलग रहने वाले और मायूस शौहर को अपने आप में और घर के मामलात में दिलचस्पी लेने पर माएल कर सकती है और घर की फिज़ा को ख़ुलूस और मुहब्बत से भर सकती है।

डेल कारनेगी कहता है : ''जब घर सजा हुआ होगा और कमरे ऐसे सलीक़े से सजाए गये हों कि मकान को पसन्दीदा बना दें और औरत घर में शौहर की मौजूदगी पर ख़ुशी का इज़हार करे तो शौहर इधर–उधर दूसरों के पास भटकने के बजाए सीधा अपने घर आता है इसकी वजह यह है कि पहले तो शौहर फ़ख्र महसूस करता है कि उसकी हालत इतनी अच्छी है और बाद में वह घर से मानूस हो जाता है। शौहर को घर में आज़ाद छोड़ देना चाहिए। उसका जहाँ जी चाहे बैठे, जो जी चाहे खाए, अपना सिगार और रोज़नामा जहाँ जी चाहे रखे और आख़िरकार उसे घर में मुकम्मल आराम हासिल हो।''

ख़ुशी और सुकून ऐसी चीज़ें नहीं जिन्हें बाज़ार से ख़रीदा जा सके बल्कि उन्हें फक़त शौहर और बीवी के नेक अख़्लाक़, तौर–तरीक़ों और बात–चीत से ही हासिल किया जा सकता है।

इमाम सज्जाद (अ0) ने फरमाया है : ''अच्छी बातें इन्सान की दौलत और रोज़ी को बढ़ाती हैं। उसकी उम्र को लम्बा करती हैं। बीवी और औलाद के दरमियान मुहब्बत की वजह बनती हैं और इंसान को जन्नत में पहुँचाती हैं।''

(अज़्ज़वाजु फ़िल इस्लाम पेज–198)

शौहर और बीवी की ज़िम्मेदारियों के बारे में मग़रिब के दानिश्वरों ने कई एक बयानात दिये हैं जिनके नज़रिये की तरफ हम इशारा करते हैं लेकिन इस नुक्ते का ज़िक्र कर देना ज़रूरी है कि इस्लामी अहकाम और दानिश्मन्दों के दरमियान फ़र्क़ है और वहयह कि इस्लामी अहकाम का सरचश्मा अल्लाह का पैग़ाम है जो हर क़िस्म की ग़लती और कमी से पाक है जबकि दानिश्मन्दों के ख़यालात जो तजर्बे वग़ैरा से हासिल किये गए हैं शक–शुब्हे से ख़ाली नहीं हैं और यही वजह है कि अकसर मसाएल के बारे में ख़ुद उनके बीच बहुत से इख़्तेलाफात मौजूद हैं। इसके अलावा हर रोज़ पिछले दानिश्मन्दों के ख़यालात रद कर दिये जाते हैं और नये ख़यालात उनकी जगह ले लेते हैं लेकिन इस्लाम के अहकाम चौदह सौ साल गुज़र जाने के बाद भी पूरी तरह अपनी ताक़त और एतबार के बल–बूते पर बाक़ी हैं और इस ज़माने के दानिश्मन्द भी उनकी ताईद करते है।

(जारी)